Hh – जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे आप नष्ट हो जायेंगे लूका
१३:१-९ | 1

– Save This Page as a PDF–

जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे आप नष्ट हो जायेंगे लूका १३:१-९

खुदाई: यरूशलेम से इस समाचार के बारे में यीशु ने किस विचार को अस्वीकार कर दिया? वह नये को नये तरीके से कैसे लागू करता है? पद ६-९ में अंजीर का पेड़ क्या दर्शाता है? मालिक किसका प्रतिनिधित्व करता है? किसान किसका प्रतिनिधित्व करता है? इतनी जल्दी क्यों? क्या इज़राइल की जगह कलीसिया ने ले ली है? क्यों? क्यों नहीं?

चिंतन: आप अपने जीवन की तुलना अंजीर के पेड़ से कैसे करेंगे? यदि आपके पास अपना जीवन बदलने के लिए अंजीर के पेड़ की तरह एक और वर्ष हो, तो आप क्या करेंगे? आप अगले वर्ष इस समय तक कौन सा फल पैदा करना चाहते हैं?

अब, वस्तुतः, उसी समय है। यह शब्द लूका १२:५४-५९ के विषय को जारी रखता है क्योंकि यीशु ने भीड़ को एडोनाई के साथ मेल-मिलाप करने की आवश्यकता पर चुनौती दी थी। प्रभु का सामना कुछ ऐसे लोगों से हुआ जिन्होंने उन्हें फंसाने के लिए चतुराई से रची गई साजिश के तहत उनके मसीहा होने से इनकार कर दिया। उस समय वहाँ कुछ लोग मौजूद थे जिन्होंने यीशु को उन गलीलियों के बारे में बताया जिनका खून पिलातुस ने उनके बलिदानों में मिला दिया था (लूका १३:१)। यह पहचानते हुए कि नाज़रीन गलील से आए थे, उन्होंने अनुमान लगाया कि उनकी सहानुभूति गैलिलियों के साथ होगी, जिन्हें पीलातुस ने मंदिर में बलिदान चढ़ाते समय मार डाला था, और येशुआ, एक ओर, रोमन अभियोजक की निंदा करेगा। इससे उन्हें पिलातुस के सामने उस पर आरोप लगाने का आधार मिल जाएगा, इस उम्मीद में कि वह मसीह को रोम के खिलाफ देशद्रोही के रूप में मौत की सजा देगा। दूसरी ओर, यीशु गैलिलियों के प्रति सहानुभूति व्यक्त कर सकते थे क्योंकि यहूदियों का मानना था कि किसी भी असामान्य आपदा को किसी गुप्त पाप के कारण किसी व्यक्ति के खिलाफ दैवीय निर्णय के रूप में देखा जाता था। इसलिए इन गैलिलियों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना यहूदियों की इस लोकप्रिय धारणा का खंडन करना होगा कि पीड़ा को ईश्वर की नाराजगी का संकेत माना जाता है और वास्तव में, इन लोगों की पापपूर्णता के लिए ईश्वर को दोषी ठहराया जाता है। उनका मानना था कि यीशु जिस भी तरह से उत्तर देंगे, उनके पास उस पर आरोप लगाने का एक आधार होगा। जांचो दोस्त।

लेकिन मसीह ने न तो गैलिलियों की निंदा की और न ही पीलातुस की। उन्होंने पाप और पीड़ा के बीच किसी भी संबंध की लोकप्रिय धारणा को खारिज कर दिया (यूहन्ना ९:३), यह

Hh – जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे आप नष्ट हो जायेंगे लूका
१३:१-९ | 2

घोषणा करते हुए कि वे किसी भी अन्य इस्राएली की तुलना में न तो कम थे और न ही बदतर पापी थे। यीशु ने उत्तर दिया: क्या तुम सोचते हो कि ये गलीली अन्य सब गलीलियों से भी अधिक पापी थे क्योंकि उन्होंने इस प्रकार कष्ट सहा था? तब यीशु ने अपने दोष लगानेवालों को स्पष्ट उत्तर देते हुए कहा: मैं तुमसे कहता हूं, नहीं! परन्तु जब तक तुम मन न फिराओगे, तुम सब भी नष्ट हो जाओगे (लूका १३:२-३)। यह उन लोगों को चुभ गया होगा जिन्होंने उन्हें धोखा देने की कोशिश की थी क्योंकि मालिक ने कहा था कि वे भी उतने ही दोषी थे जितने कि उन्होंने उन्हें परमेश्वर के क्रोध का दोषी माना था।

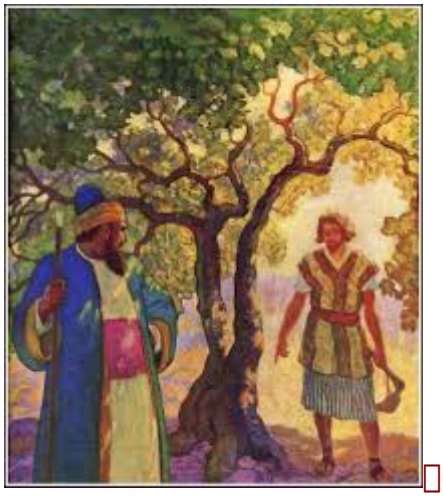
फिर येशुआ ने उनके सोचने के तरीके को बदलने के लिए अपने उपदेश को मजबूत करने के लिए खुद एक और घटना जोड़ी। या वे अठारह जो सिलोम में टावर गिरने से मर गए – क्या आपको लगता है कि वे यरूशलेम में रहने वाले अन्य सभी लोगों की तुलना में अधिक दोषी थे (लूका १३:४)? अठारह आदमी थे जो सिलोम के गिरते टॉवर से कुचल गए थे, शायद जब पीलातुस जलसेतु का निर्माण कर रहा था, जिसके लिए उसने मंदिर के खजाने से पैसे चुराकर भुगतान किया था (जोसेफस एंटिकिटीज़ २:९ और ४)। यहूदियों को लगा कि इन साथी इस्राएलियों ने पिलेट्स की परियोजना पर काम करते समय पाप किया है क्योंकि उन्होंने अपना वेतन मंदिर के खजाने में वापस दान नहीं किया था जहां से इसे चुराया गया था। प्रभु ने इस बात से इनकार किया कि वे लोग यरूशलेम में रहने वाले बाकी लोगों से भी बदतर थे। फिर से, उसने उन्हें भविष्यवाणी की भाषा में चेतावनी दी कि यदि उन्होंने पश्चाताप नहीं किया तो उनका क्या होगा, उन्होंने कहा: मैं तुमसे कहता हूं, नहीं! परन्तु जब तक तुम मन न फिराओगे, तुम भी उन सब की नाईं नाश हो जाओगे (लूका १३:५)। यह वस्तुतः येरुशलायिम के पतन में पूरा हुआ जब इसे रोमन जनरल टाइटस द्वारा हिंसक रूप से नष्ट कर दिया गया और बड़ी संख्या में लोग अपने शहर और मंदिर की गिरती दीवारों के नीचे मर गए (देखें Mt – टीशा बाव ७० ईस्वी पर यरूशलेम और मंदिर का विनाश) ।

यह शब्द पश्चाताप (हिब्रू: स्हुवाभ (स्त्रीलिंग संज्ञा), जिसका अर्थ है अविश्वासी, बेवफा, धर्मत्याग, या शुवब (क्रिया), जिसका अर्थ है पश्चाताप करना, मुड़ना, सभी पापों को त्यागना, या पाप को स्वीकार करना (अधिक विवरण के लिए यिर्मयाह Ac पर मेरी टिप्पणी देखें – यहूदी परिप्रेक्ष्य से यिर्मयाह की पुस्तक: मुख्य शब्द: शूब) उनके पसंदीदा में से एक है। युहन्ना ने इसका बार-बार उपयोग किया, जैसा कि येशुआ ने अपने पहले उपदेश में किया था (लूका ५:२३), और यह उपदेश देने वाले चर्चों के केंद्र में भी होगा प्रेरितों में भी। प्रभु ने कहा कि केवल गैलीलियन पापियों या यरूशलेम में त्रासदी के पीड़ितों को ही पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं थी; येशुआ (और लूका के) के सभी दर्शकों को पश्चाताप करना चाहिए ताकि वे दैवीय न्याय के अधीन न आएँ।

परमेश्वर के राज्य से अधिकांश यहूदियों का बहिष्कार, एक विषय जो प्रेरितों १३:४६-४७, १८:६, और २८:२६-३० में लगातार दोहराया गया है, को भी इस अनुच्छेद से समझा

Hh – जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे आप नष्ट हो जायेंगे लूका
१३:१-९ | 3

जा सकता है। न्याय से राहत मिलने के बावजूद, इस्राएल ने पश्चाताप के अनुरूप कोई फल नहीं दिया (लूका ३:८)। यीशु ने पहले ही देख लिया था कि उसका उपदेश, यिर्मयाह की तरह, बहरे कानों और ठंडे दिलों पर भी पड़ेगा, इसलिए उसने इस्राएल पर शोक व्यक्त किया (लूका १३:३४-३५ और २१:२४)। कुल्हाड़ी, जो पहले से ही जड़ पर है (लूका ३:९), घुमा दी जाएगी और गिरे हुए पेड़ को आग में फेंक दिया जाएगा। स्पष्ट रूप से, लूका ने ७० ईस्वी की घटनाओं को इस ईश्वरीय निर्णय की पूर्ति के रूप में समझा। फिर भी लूका यह भी चाहता था कि उसके पाठक यह समझें कि इस्राएल के साथ जो हुआ वह उनके लिए भी एक चेतावनी थी। यानि हम। ओह!



इसके बाद मसीह ने एक दृष्टांत के माध्यम से यह समझाना
शुरू किया कि वह पीढ़ी न्याय के योग्य क्यों थी। सम्पूर्ण राष्ट्र निष्फलता का दोषी था। फिर उस ने यह दृष्टान्त कहा, किसी मनुष्य की दाख की बारी में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था, और वह उस में फल ढूंढ़ने को गया, परन्तु न पाया। इसलिए उसने किसान से कहा, “मैं तीन साल से इस अंजीर के पेड़ पर फल ढूँढ़ने आ रहा हूँ और मुझे एक भी फल नहीं मिला। अंजीर के पेड़ को परिपक्व होने में तीन साल लगे। तीन वर्षों से यीशु इस्राएल को पश्चाताप करने के लिए बुला रहा था, लेकिन उसने धार्मिकता का फल लाने के लिए पश्चाताप नहीं किया था। इसे काट डालें! इसे मिट्टी का उपयोग क्यों करना चाहिए?” अब वह आदमी अंगूर के बगीचे को इस बेकार पेड़ से मुक्त कराना चाहता है और कुछ ऐसा पौधा लगाना चाहता है जिससे इस जगह का अधिक लाभप्रद उपयोग हो सके। हालाँकि, किसान मसीहा ने अंजीर के पेड़ को एक आखिरी मौका देने के लिए हस्तक्षेप किया। यदि अतिरिक्त देखभाल और उपचार के बाद आने वाले वर्ष में यह फल नहीं देता है, तो इसे काट दिया जाएगा। “सर,” आदमी ने जवाब दिया, “इसे एक और साल के लिए अकेला छोड़ दो, और मैं इसके चारों ओर खुदाई करूंगा और इसमें खाद डालूंगा। खुदाई मिट्टी को ढीला करने का काम करती है ताकि पानी उसकी जड़ों तक जा सके ताकि उसे बढ़ने के लिए जगह मिल सके। यदि उसके बाद कोई फल नहीं आता है, तो यह स्पष्ट रूप से एक ख़राब पेड़ है। अगर यह अगले साल फल देता है, तो ठीक है! यदि नहीं, तो इसे काट डालो” (लूका १३:६-९)।

Hh – जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे आप नष्ट हो जायेंगे लूका
१३:१-९ | 4

अंजीर का पेड़ इज़राइल का प्रतिनिधित्व करता है (यशायाह Ba पर मेरी टिप्पणी देखें – दाख की बारी का गीत; यिर्मयाह ८:१३, २४:१-१०; होशे ९:१० और १६ भी देखें), और एडोनाई दाख की बारी का मालिक है। अंजीर का पेड़ केवल एक ही उद्देश्य के लिए लगाया जाता है – फल प्रदान करने के लिए। फलहीन अंजीर का पेड़ न केवल स्वयं बेकार होता है, बल्कि वह इतनी ज़मीन घेरता है कि उस पेड़ का उपयोग किया जा सकता है जिस पर फल लग सकते हैं। तब करने के लिए एकमात्र समझदारी वाली बात यह है कि फलहीन पेड़ को काट दिया जाए ताकि भूमि का उपयोग फल देने वाले पेड़ के लिए किया जा सके। मनुष्य का पुत्र परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करने आया था। दैवीय न्याय के अधीन होने से पहले यह इज़राइल के लिए पश्चाताप करने का आखिरी अवसर था। दुख की बात है कि उसने अपने मेशियाच को अस्वीकार कर दिया। इज़राइल को काट दिया जाना था, यानी राष्ट्रीय न्याय के तहत लाया जाना था। जैसा कि ऊपर कहा गया है, यह निर्णय ७० ईस्वी में आएगा, जब टाइटस यरूशलेम शहर और मंदिर को नष्ट कर देगा। लेकिन इसका मतलब इस्राएल के लिए परमेश्वर के कार्यक्रम की समाप्ति नहीं था, बल्कि यह संकेत था कि उसे कुछ समय के लिए अलग कर दिया जाएगा। एक नए कार्यक्रम के माध्यम से परमेश्वर अपनी महिमा के लिए फल उत्पन्न करेंगे। मसीह ने इस नए कार्यक्रम का खुलासा तब किया जब वह कैसरिया फिलिप्पी में थे (देखें Fx – इस चट्टान पर मैं अपना कलीसिया बनाऊंगा)। बाद में, जब येरुशलायिम में उन्होंने एक नए कार्यक्रम की स्थापना के लिए इज़राइल को अलग करने की बात कही जिसके माध्यम से ईश्वर वर्तमान युग में काम करेगा (देखें Iy – आप किस अधिकार से ये काम कर रहे हैं)।

इन छंदों में यीशु दिखाते हैं कि एडोनाई इस्राएल राष्ट्र के प्रति कितने धैर्यवान हैं। अंजीर के पेड़ के रूपक का उपयोग अक्सर तानाख में किया जाता है, और मत्तीयाहू २१:१८-२२ में भी यहूदी लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए किया जाता है, जिनसे धर्मी जीवन जीने और दुनिया के अन्य गैर-यहूदी राष्ट्रों को ईश्वर की सच्चाई का संचार करके फल लाने की उम्मीद की जाती थी (यशायाह ९:६)। तो क्या एक साल और बीत गया? क्या यहूदी लोगों को ईश्वर द्वारा काट दिया गया या अलग कर दिया गया और उनकी जगह कलीसिया ने ले ली? निश्चित रूप से नहीं (यिर्मयाह ३१:३३-३६)! स्वर्ग न करे (रोमियों ११:१-२ और ११-१२)! कुछ यहूदी, येशुआ हा मशीहाक पर भरोसा करके, उसके साथ एकजुट रहते हैं और फल लाते हैं (योचनान १५:१-८, बेल रूपक में); जबकि हाशेम धैर्यपूर्वक यहूदी लोगों को तब तक सुरक्षित रखता है जब तक कि सभी इसाराएल (महान क्लेश के अंत में विश्वास करने वाले अवशेष, प्रकाशितबाक्य Ev पर मेरी टिप्पणी देखें – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार) को बचाया नहीं जाएगा (रोमियों ११:२६)।

अपने अंतहीन धैर्य में, ईश्वर अपने लोगों को पश्चाताप करने और उनके भीतर अपने जीवन का फल उत्पन्न करने के लिए कई अवसर देते हैं। वह हमें अपने पास वापस लाने का स्वागत करते नहीं थकता। वह फल उत्पन्न करने की हमारी क्षमता को देखता है और यदि हम केवल पश्चाताप करेंगे तो वह हमारी मदद करेगा। लेकिन, जैसा कि मसीहा के दृष्टांत से पता चलता है, यह हमारी प्रतिक्रिया में देरी करने का कोई बहाना नहीं

Hh – जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे आप नष्ट हो जायेंगे लूका
१३:१-९ | 5

है।

यदि हम “प्रभारी” होते, तो संभवतः हम पाप करने वालों की निंदा करने में यीशु की तुलना में बहुत तेज़ होते, विशेषकर ऐसे पाप जो हमें सीधे चोट पहुँचाते हैं। हमने कितनी बार कामना की है कि किसी विशेष रूप से अप्रिय व्यक्ति को उसका हक मिले? हालाँकि, यदि हम प्रतिशोध की माँग के अनुसार दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं, तो हमें स्वयं को उसी प्रकार के न्याय के अधीन प्रस्तुत करना होगा – यह कोई सुखद संभावना नहीं है। स्वयं पापी, हम भी दोषी ठहरेंगे।

शुक्र है, परमेश्वर उस तरह से काम नहीं करता। जबकि वह जानता है कि हम निंदा के पात्र हैं, वह इस आशा में निर्णय को रोकता है कि हम उसके आह्वान को स्वीकार करेंगे। ईश्वर प्रतिशोध और दुर्भाग्य का रचयिता नहीं है, और वह दुष्टों के विनाश से प्रसन्न नहीं होता है। क्योंकि मैं किसी की मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता, एडोनाई एलोहिम की घोषणा है। पश्चाताप करो और जियो (यहेजकेल १८:३२)। वह केवल अच्छाई और जीवन प्रदान करता है। दाऊद की प्रार्थना सच है: मेरी आत्मा, एडोनाई को आशीर्वाद दो, और उसके किसी भी लाभ को मत भूलो! वह आपके सभी अपराधों को क्षमा करता है, वह आपकी सभी बीमारियों को ठीक करता है, वह आपके जीवन को गड्ढे से बचाता है, वह आपको अनुग्रह और करुणा से घेरता है (भजन १०३:२-४ सीजेबी)।

यदि ईश्वर हमारे साथ दया और प्रेम का व्यवहार करता है, तो हमें दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? दूसरों की सेवा करने की हमारी इच्छा इस बात का विश्वसनीय माप है कि हमने अपने पिता के प्रेम और दया को कितनी पूरी तरह से अपनाया है। हमें निराश करने के बजाय, उसने अपने बेटे को खुशखबरी सुनाने के लिए भेजा, और अगर हम अपने पापों से पश्चाताप करते हैं और उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में देखते हैं, तो वह हमें उसकी आत्मा से भर देता है। आइए हम उसी धैर्य और प्रेम के साथ दूसरों तक पहुँचें जो हमें ईश्वर से मिला है। आइए हम रुआच हाकोडेश से भी पूछें कि हम उससे दया प्राप्त करने की क्षमता बढ़ाएं और बदले में इसे दूसरों को दिखाएं।

प्रभु यीशु, हम कृतज्ञ हृदयों से आपके पास आते हैं, क्योंकि आप हमारे स्वर्गीय पिता तक वापस जाने का मार्ग प्रदान करते हैं। जैसे ही हम दूसरों तक पहुँचते हैं, अपनी रुचि के आगे झुकने में हमारी सहायता करें।